INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान SI

उपनिरीक्षक / प्लाटून कमांडर

भाग – 4

भूगोल + इतिहास + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था (भारत)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/c37ssj

Online Order करें - https://shorturl.at/mpOV7

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत का भूगोल	
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भौतिक विशेषताएं और प्रमुख भौतिक विभाजन	2
3.	नदियाँ एवं झीलें	7
4.	जलवायु	12
5.	प्राकृतिक वनस्पति	15
6.	भारत में मृदा	18
7.	कृषि और कृषि आधारित गतिविधियां	20
8.	खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	26
9.	प्रमुख उद्योग और औद्योगिक विकास	36
10.	परिवहन एवं प्रमुख परिवहन गलियारे	43
	भारत का इतिहास	
1.	प्रागैतिहासिक काल (प्राचीन काल)	52
2.	वैदिक संस्कृति	55
3.	बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म	59
4.	महाजनपद काल	63
5.	मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	64
6.	गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	67
7.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	70
	मध्यकालीन भारत	

1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	84
2.	दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश	86
3.	बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	94
4.	मुगल साम्राज्य (1526 – 1707 ई.)	96
5.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	104
	<u>आधुनिक भारत का इतिहास</u>	
1.	18 वीं शताब्दी के आसपास अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	106
2.	1857 ई. का विद्रोह (1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन	112
3.	सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन (19 वीं सदी)	116
4.	राष्ट्रीय आंदोलन	119
5.	गाँधी युग	124
6.	क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	129
7.	स्वतंत्रता के आसपास का भारत	132
	<u>भारत का संविधान</u>	
1.	संवैधानिक विकास	135
2.	संविधान सभा	137
3.	संविधान की प्रमुख विशेषताएं	139
4.	संविधान की प्रस्तावना	142
5.	मौलिक अधिकार	144

6.	राज्य के नीति निदेशक तत्व	147
7.	मौलिक कर्तव्य / मूल कर्तव्य	148
8.	संविधान संशोधन	150
9.	आपातकालीन उपबंध	155
10.	जनहित याचिका और न्यायिक समीक्षा	157
11.	केन्द्र- राज्य सम्बन्ध	161
12.	गठबंधन सरकारें	164
13.	राजनीतिक दल	167
14.	राष्ट्रपति	170
15.	उपराष्ट्रपति	185
16.	भारतीय संसद	186
17.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	191
18.	सर्वोच्च न्यायालय	192
19.	राज्य विधान मंडल	194
20.	निर्वाचन आयोग	198
21.	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	201
22.	योजना आयोग	202
23.	राष्ट्रीय विकास परिषद्	204
24.	केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC)	204
25.	केंद्रीय सूचना आयोग	208
26.	लोकपाल	211
27.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)	213
28.	स्थानीय स्वशासन और पंचायती राज	215

	अर्थशास्त्र	
1.	अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें	219
2.	बजट एवं बजट निर्माण	222
3.	बैंकिंग	231
4.	सार्वजनिक वित्त (लोक वित्त)	246
5.	राष्ट्रीय आय	250
6.	संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	256
7.	लेखांकन – अवधारणा, उपकरण एवं प्रशासन में उपयोग	258
8.	स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार	266
9.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	271
10.	सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली	272
11.	ई–कॉमर्स	277
12.	मुद्रास्फीति – अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र	281
13.	भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	286
14.	आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें	290
15.	मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास	296
16.	गरीबी एवं बेरोजगारी	299
17.	केंद्र सरकार की योजनाएँ	306

भारत का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6'उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवाँ स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में s दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।
  भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) हैकर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचों -बीच से गुजरती है।

➢ भारत के जिन राज्यों में से होकर कर्क रेखा गुजरती है वे हैं- गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम ।

➢ भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।

1. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तर का विशाल मैदान
3. दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
4. समुद्री तटीय मैदान
5. थार का मरुस्थल

➢ भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।

➢ भारतीय मानक समय की देशांतर रेखा (82°30) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं आंध्रप्रदेश से गुजरती है।

➢ भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।

➢ भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले भारत में	
जिला	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य	
राज्य	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
राजस्थान	342239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
उत्तर प्रदेश	240928
गुजरात	196024

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु

दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप)
उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात)
पूर्वी बिन्दु-किबिथु (अरुणाचल प्रदेश)
मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान(1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश,नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

प्रमुख चेंनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	चेंनल/खाड़ी/स्ट्रेट
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चेंनल
लघु अंडमान-निकोबार	10°चेंनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चेंनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चेंनल
भारत-श्रीलंका	मन्नार की खाड़ी
पाक की खाड़ी	पाक स्ट्रेट

- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा पठारी राज्य है।
- मध्य प्रदेश में वन (जंगल) सबसे अधिक है।
- भारत में द्वीपों की कुल संख्या 248 है बंगाल की खाड़ी में 223 तथा अरब सागर में 25 द्वीप है ।
- पूर्वी घाट को कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है।
- पश्चिमी घाट को मालाबार तट के नाम से जाना जाता है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।]
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।
- भारत में राष्ट्रीय राज मार्ग की कुल लम्बाई 1,42,126 लगभग किमी. हैं।
- भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 है जो बनारस से कन्याकुमारी तक जाता है (3,745 किमी.)।
- वर्ष 2020 में भारत में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 67,956 किमी थी जबकि रनिंग ट्रैक लम्बाई सहित यह 99,235 किमी है। यार्ड, साइडिंग आदि मिलाकर कुल मार्ग 1,26,366 किमी है।
- तिरुअनन्तपुरम एवं कोचीन (केरल) नगरों में मानसून की सर्वप्रथम वर्षा होती है।

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत-बांग्लादेश सीमा	4096 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

अध्याय – 2

भौतिक विशेषताएं और प्रमुख भौतिक विभाजन

- भारत की स्थलाकृति को पांच भागों में बाँटा जा सकता है।
  - उत्तर भारत का पर्वतीय क्षेत्र
  - प्रायद्वीपीय पठार
  - मध्यवर्ती विशाल मैदान
  - तटवर्ती मैदान
  - द्वीप समूह

पर्वत

1. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

- यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतीय स्थलाकृति है, जिसका विस्तार भारत के पश्चिम से लेकर पूर्व तक है ।
- इस पर्वतीय श्रेणी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।
  1. ट्रांस हिमालय श्रेणी
  2. हिमालय पर्वत श्रेणी
  3. पूर्वांचल की पहाड़ियों
- **ट्रांस हिमालय** का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था इसके अन्तर्गत काराकोरम लद्दाख कैलाश व जास्कर श्रेणी आती है ।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।
- काराकोरम श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- भारत की सबसे ऊंची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611 m) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
  - यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
  - काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित हैं
  - काराकोरम दर्रा काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा हैं ।
  - काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है ।
  - विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है ।
  - काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।
    - सियाचिन (72 km)
    - बाल्टोरो - (58km)
    - बीयाफो – 63 km
    - हिस्पर (61 Km)

लद्दाख श्रेणी - विश्व की सबसे बड़ी ढाल वाली चोटी राकापोशी लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है। यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- यह भारत का न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।

जास्कर श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणीहै।

- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणीयों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।

1. वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय - इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 6100 मी॰ तक है। विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
- कंचनजंगा (8598 मी.)
- मकालू (8481 मी.)
- धौलागिरी (8172 मी.)
- अन्नपूर्णा (8076 मी.)
- नंदा देवी (7817 मी.)
- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुगंमा' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- हिमालय का निर्माण भारतीय सह – ऑस्ट्रलियाई प्लेट एवं यूरोशियाई प्लेट की अभिसरण प्रक्रिया से हुआ है ।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत , नामचा बरवा इसके महत्त्वपूर्ण शिखर है/
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यही स्थित हैं/
- यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है/

2. लघु या मध्य हिमालय -

- महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 3700 से 4500 मी. है/
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
- पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
- धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
- नाग टिब्बा (उत्तराखंड)
- कुमायूँ (उत्तराखंड)
- महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है ।
- कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
- कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
- काठमांडू घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल हैं –
- कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश) अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखंड)
- लघु हिमालय की श्रेणीयों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हे जम्मू-कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखंड में 'बुग्याल व पयार' कहा जाता है।

शिवालिक या बाह्य हिमालय

- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं ।
- यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते है।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक से पंजाब व हिमाचल प्रदेश में छोटी- छोटी धाराएँ निकलती हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहा जाता है।
- ये धाराएँ शिवालिक का अपरदन कर देती है एवं शिवालिक को कई भागो बाँट देती हैं ।

करेवा

पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई । ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरन / केसर की खेती की जाती है जिन्हें करेवा कहा जाता है।

ऋतु प्रवास

जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार है नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंघीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है । पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता हैं यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं/

- नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरमाटी (3826 मीटर) है ।
- मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंट हैं
- पूर्वांचल की पहाड़िया काफी कटी - फटी हैं
- गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं/
- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं
- इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं

भारत के प्रमुख दर्रे

- हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वतमाला हैं
- इन पर्वतमाला की कुछ दर्रे इस प्रकार हैं –

1. पश्चिमी हिमालय के दर्रे
2. पूर्वी हिमालय के दर्रे
3. पश्चिमी घाट के दर्रे

1. पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -

- **काराकोरम:** - यह काराकोरम श्रेणी मे अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है। इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिंजियांग प्रान्त से मिलाता है।
- **चांगला** : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता हैं/
- **बनिहाल** : - यह पीरपंजाल श्रृंखला में स्थित हैं / इसी में जवाहर सुरंग स्थित है /
- **लानक ला** : - लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित हैं और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता हैं/
- **बरालाचा ला** :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता हैं इसी से मनाली – लेह सड़क गुज़रता हैं / यह शीत ऋतु बंद रहता है।
- **पीरपंजाल** : - यह पीरपंजाल पर्वत श्रेणी में स्थित है जम्मू से श्रीनगर जाने का मार्ग हैं लेकिन आजादी के बाद इसे बंद कर दिया गया है /
- **जोजिला** : - यह श्रीनगर, कारगिल एवं लेह के बीच संपर्क को स्थापित करता है इसके महत्त्व को देखते हुए श्रीनगर जोजिला सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित किया गया हैं/
- **खारदुंग ला** :- यह जम्मू - कश्मीर के काराकोरम पर्वत श्रेणी में छः हजार मीटर से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित हैं इसी में भारत की सबसे ऊँची सड़क स्थित है /
- **थांग ला** : -इस दर्रे से देश की दूसरी सबसे ऊँची सड़क गुज़रती है ।
- **रोहतांग** :- यह हिमाचल के लौह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता है /
- **शिपकी ला** : -यह झेलम महाखंड पर छः हजार मीटर से अधिक की ऊँचाई पर स्थित हैं जो हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से मिलाता हैं /
- **लिपु लेख** : - यह उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है / यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में अवस्थित हैं / इस पर उत्तराखंड, चीन, और नेपाल के ट्राई – जंक्शन स्थित हैं । इसी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सम्पन्न होता हैं/
- **माना** : - यह भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता हैं जो बद्रीनाथ मंदिर से कुछ ही दूर स्थित है ।
- **नीति** :- यह भी उत्तराखंड और तिब्बत के जोड़ता है जो नवम्बर से लेकर मई तक बंद रहता हैं/

2. पूर्वी हिमालय के दर्रे : -

- **नाथू ला** : - यह सिक्किम (भारत) – चीन सीमा पर स्थित हैं जो लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर हैं/ यह प्राचीन सिल्क मार्ग का अंग था और यहाँ से भारत एवं चीन के बीच व्यापारिक संबंध थे / भारत – चीन युद्ध के बाद इसे बंद कर दिया गया था / लेकिन वर्ष 2006 को पुन: खोल दिया गया हैं/
- **बोम-डि-ला** : - यह भारत के पड़ोसी देश भूटान के पूर्व में तथा भारत - चीन सीमा के थोडा सा दक्षिण में महान हिमालय में स्थित है
- यह अरुणाचल प्रदेश का ल्हासा से सम्पर्क स्थापित करता हैं/
- **जेलेप ला** : -यह सिक्किम – भूटान सीमा पर स्थित हैं और चुम्बी घाटी द्वारा सिक्किम को ल्हासा (तिब्बत) से जोड़ता हैं/
- **दिहांग** : - यह अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी भाग पर स्थित हैं जो अरुणाचल प्रदेश को म्यांमार के मांडले को जोड़ता है
- **दीफू** : - यह अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी भाग पर स्थित हैं और म्यांमार के मांडले को छोटा मार्ग उपलब्ध कराता है जो साल भर यातायात के लिए खुला रहता हैं/
- **यांगसान** : - यह भी अरुणाचल प्रदेश को म्यांमार के मांडले को जोड़ता है / जो लगभग 4000 हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित हैं/

3. पश्चिमी घाट के दर्रे :-

- **भोर घाट** : - यह महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में स्थित हैं जिसकी ऊँचाई 630 मीटर हैं जो पुणे – कोलकाता के लिए मार्ग प्रस्तुत कराता हैं/
- **पाल घाट** :- केरल राज्य में स्थित यह दर्रा कोच्चि से कोयम्बटूर के लिए मार्ग प्रदान करता है /
- **थाल घाट** : - यह महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट की 583 मीटर ऊँचा दर्रा हैं यहाँ से मुंबई व दिल्ली के लिए मार्ग प्रस्तुत होता हैं/
- **शेकोट्टा** :- ये केरल और तामिलनाडु को आपस में जोड़ता है।

अध्याय – 6

भारत में मृदा

- मिट्टी के अध्ययन को मृदा विज्ञान या पेडोलॉजी (pedology) कहा जाता है।

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा (तराई मृदा , बांगर मृदा, खादर मृदा)
2. काली मृदा
3. लाल और पीली मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. पर्वतीय मृदा
6. मरुस्थलीय मृदा
7. लवणीय मृदा
8. पीट एवं जैव मृदा

- 1953 में केन्द्रीय मृदा संरक्षण बोर्ड का गठन किया गया।
- मृदा में सबसे अधिक मात्रा में क्वार्टज खनिज पाया जाता हैं।
- ऐपेटाइट नामक खनिज से मृदा को सबसे अधिक मात्रा में फास्फोरस प्राप्त होता हैं।
- वनस्पति मिट्टी में ह्युमस की मात्रा निर्धारित करती हैं।
- मृदा में सामान्यतः जल 25 प्रतिशत होता हैं।

1. जलोढ़ मिट्टी –

- यह मिट्टी भारत के लगभग 22% क्षेत्रफल पर पायी जाती है भारत का सम्पूर्ण उत्तरी मैदान, तटीय मैदान जलोढ़ मिट्टी का बना है।
- इसमें गाद, मर्तिका व रेत (slit ,clay & sand) के कण पाये जाते हैं।
- जलोढ़ मिट्टी को कछारी मृदा भी कहा जाता है।
- इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है / इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है।

इस मृदा के तीन प्रकार होते है –

1. बांगर (bangar)
2. खादर (khadar),
3. तराई

- पुराने जलोढ़ मिट्टी के मैदान **बांगर** कहलाते हैं।
  बांगर मृदा सतलज एवं गंगा के मैदान के उपरी भाग तथा नदियों के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती है। यहाँ बाढ़ का पानी नही पहुँच पाता है। इस मृदा में चीका एवं बालू की मात्रा लगभग बराबर होती है।
- नयी जलोढ़ मिट्टी को **खादर** कहा जाता है।
  यह नवीन जलोढ़ मृदा है यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढ़ का पानी पहुँचने से नवीनीकरण होता रहता है। यह मृदा खरीफ के फसल के लिए उपयुक्त होती है।
- यह नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग में पंजाब से असम तक तथा नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावरी के तटवर्ती भागों में विस्तृत हैं।
- यह मिट्टी उच्च भागों में अपरिपक्व तथा निम्न क्षेत्रों में परिपक्व हैं।
- इस मिट्टी में पोटाश व चूना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जबकि फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवांश का अभाव पाया जाता है।
- यह उपजाऊ मृदा है उर्वरता के दृष्टिकोण से यह काफी अच्छी मानी जाती है। इसमें धान, गेहूं, मक्का, तिलहन, दलहन, आलू आदि फसलें उगायी जाती हैं।
- **तराई मृदा** में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे – छोटे पत्थर आदि पाएँ जाते है।
- इस मृदा में चट्टानी कणों के होने से जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती हैं।
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक होती हैं।
- यह गन्ने की कृषि के लिए उपयुक्त होता है।

2. लाल - पीली मिट्टी :-

- यह देश के लगभग 6.1 लाख वर्ग कि.मी. (18.6%) भू-भाग में हैं।
- इस मिट्टी का विकास आर्कियन ग्रेनाइट, नीस तथा कुड़प्पा एवं विंध्यन बेसिनों तथा धारवाड़ शैलों की अवसादी शैलो के उपर हुआ है।
- इनका लाल रंग लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण हुआ है।
- यह मिट्टी आंशिक रूप से अम्लीय प्रकार की होती हैं। इसमें लौहा, एल्युमीनियम तथा चूने का अंश कम होता हैं तथा जीवांश (ह्यूमस), नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी पाई जाती हैं।
- यह मिट्टी प्राय : उर्वरता-विहीन बंजर भूमि के रूप में पायी जाती हैं।
- भारत में यह मृदा झारखण्ड के संथाल परगना अवाम छोटा नागपुर का पठार पश्चिम बंगाल के पठारी क्षेत्र तमिलनाडु कर्नाटक दक्षिण – पूर्व महाराष्ट्र पश्चिमी एवं दक्षिणी आंध्रप्रदेश मध्यप्रदेश, मेघालय की गारो, खासी एवं जयन्तिया की पहाड़ी क्षेत्रों नागालैंड, राजस्थान में अरावली के पूर्वी क्षेत्र एवं छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश के झाँसी ललितपुर मिर्जापुर में पाई जाती है।
- इस प्रकार के मृदा में मुख्यत : कपास, गेहूँ, दाले, चावल एवं मोटे अनाज की कृषि की जाती है।
- तमिलनाडु व कर्नाटक में इस मृदा में रबड़ एवं कहवा का विकास किया जा रहा है।

3. काली मिट्टी –

- इसका निर्माण बेसाल्ट चट्टानों के टूटने-फूटने से होता है।
- इसमें जलधारण क्षमता सबसे अधिक होती हैं।
- स्थानीय भाषा में इसे रेगुर कहा जाता है।
- काली मिट्टी को स्वतः जुताई वाली मृदा भी कहा जाता है। जिसमें सिचाई की कम आवश्यकता पड़ती है।
- यह मिट्टी कपास की खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

16. तम्बाकू (Nicotin) -

- यह एक शीतोष्ण कटिबंधीय पौधा है।
- तम्बाकू (tabacco) उत्पादन में चीन का विश्व में प्रथम स्थान है ।
- इसके लिए औसतन 15°C से 38°C का तापमान, 50 सेमी. की वार्षिक वर्षा बलुई दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।
- तम्बाकू की पत्तियों को सुखाने की प्रक्रिया को रचाई कहते हैं, जिससे पत्तियों में वांछित रंग, गंध तथा लचक आदि गुणों का विकास होता है ।
- प्रथम तीन शीर्ष उत्पादक राज्य आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक हैं ।
- भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा तम्बाकू निर्यातक तथा चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता राष्ट्र है ।
- भारत में विश्व के कुल तम्बाकू का 8% तम्बाकू उत्पादन होता है ।

17. नारियल (Coconut) –

- नारियल एक उष्ण कटिबंधीन जलवायु का पौधा है।
- इसे 20°C से 25°C का 150 सेमी. से अधिक की वर्षा, पाला और सूखा रहित तटीय जलवायु बलुई दोमट हल्की रेगड़ मिट्टियों की जरूरत होती है।
- इसे विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में और पहाड़ी ढालों के सहारे 800-100 मी. की ऊँचाई तक भी उगाया सकता है। इससे प्राप्त गरी से तेल, साबुन बनाने का कच्चा माल तथा वनस्पति घी आदि प्राप्त होता है।
- भारत इण्डोनेशिया और फिलीपींस के बाद विश्व में नारियल का तीसरा बड़ा उत्पादक देश है। देश के तीन दक्षिणी राज्यों केरल, तमिलनाडु एवं कर्नाटक में नारियल का 83.2 प्रतिशत क्षेत्र पाया जाता है।

प्रमुख फसलों के रोग व लक्षण रोग

फसलें	रोग	लक्षण
चावल	ब्लास्ट	पत्तियों पर भूरे रंग के नाव की आकृति में चकते दिखाई पड़ते है।
गेहूँ	रतुआ	पत्तियों पर पीले, भूरे या काले रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं ।
गन्ना	लाल विगलन ग्राशी शूट	छोटे लाल रंग के धब्बे पत्ती की मध्य शिरा पर प्रकट होते हैं गन्ने का भीतरी भाग लाल हो जाता हैं सत से पतले - पतले अनेक फल्ले फुट निकलते हैं ।
चना	उखटा	पत्तियाँ पीली पड़कर सुख जाती हैं, जड़े काली पड़कर गल जाती हैं
अरहर	तना बिगलन (स्टेन राट)	मिट्टी की सतह के पास तने पर भूरे या गहरे भूरे धब्बे उभर जाते हैं, तना कट जाता हैं और पौधे मर जाते हैं ।

प्रमुख बहु - उद्देशीय परियोजनाएँ :-

परियोजना का नाम	नदी	लाभान्वित राज्य
भांगड़ा - नांगल	सतलज नदी	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान
नागार्जुन सागर	कृष्णा नदी	आंध्र प्रदेश
चंबल	चंबल नदी	राजस्थान ,मध्य प्रदेश
हीराकुंड बांध	महा नदी	ओडिशा
व्यास	व्यास नदी	राजस्थान पंजाब हरियाणा
दामोदर	दामोदर नदी	झारखण्ड, पश्चिम बंगाल
तवा	तवा नदी	मध्य प्रदेश
मालप्रभा	मालप्रभा नदी	कर्नाटक
नागपुर शक्तिग्रह	कोरडी नदी	महाराष्ट्र
काकड़ापारा	ताप्ती नदी	गुजरात
कोसी नदी	कोसी नदी	बिहार, नेपाल
तुंगभद्रा	तुंगभद्रा नदी	आंध्र प्रदेश,कर्नाटक
मयुरक्षी	मयुरक्षी नदी	पं. बंगाल
फरक्का	गंगा नदी	पं . बंगाल
गंडक	गंडक नदी	बिहार नेपाल
कुंडा	कुंडा नदी	तमिलनाडु
कोयना	कोयना नदी	महाराष्ट्र
टिहरी	भागीरथी नदी	उतराखंड
माताटीला	बेतवा नदी	उत्तर प्रदेश
भीमा परियोजना	पवना नदी	महाराष्ट्र
शारदा	गोमती, शारदा नदी	उत्तर प्रदेश
नाथपा -झाकरी	सतलज नदी	हिमाचल प्रदेश
कोल डैम	सतलज नदी	हिमाचल प्रदेश
शरावती	शरावती नदी	कर्नाटक
इंदिरा गाँधी	सतलज नदी	पंजाब,हरियाणा, राजस्थान
उकाई	ताप्ती नदी	गुजरात

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 8

खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

खनिज संसाधन -

- खनिज से तात्पर्य प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले ऐसे पदार्थों से है जिसका निश्चित रासायनिक, भौतिक गुणधर्म एवं रासायनिक संगठन हो तथा उनको खनन उत्खनन के द्वारा प्राप्त किया जाता है साथ ही इन सभी का आर्थिक महत्त्व हो, खनिज संसाधन कहलाते हैं।

खनिज
- **धात्विक खनिज**
  - **लौह धात्विक** – उदाहरण- लौहा, मैंगनीज इत्यादि
  - **अलौहा धात्विक** – उदाहरण- तांबा, एल्युमिनियम आदि
- **अधात्विक खनिज**
  - **ईंधन खनिज** – उदाहरण- कोयला,पेट्रोलिय, प्राकृतिक गैस आदि
  - **अन्य अधात्विक खनिज** – उदाहरण- माइका, चुना पत्थर, ग्रेफाईट

- **पृथ्वी की भी पर्पटी पर पाए जाने वाले प्रमुख खनिज निम्न है-**

खनिज	प्रतिशत
ऑक्सीजन	46.60
सिलिकन	27.72
एलुमिनियम	8.13
लौह	5.00
कैलशियम	3.63
सोडियम	2.83
पोटैशियम	2.59
मैंगनेशियम	2.09
अन्य	1.41

- भारत में आजादी के समय तक 22 प्रकार के खनिजों का खनन किया जाता था लेकिन आज इनकी संख्या बढ़कर 125 हो गई है, इनमें से 35 खनिज आर्थिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अभी तक मानव को लगभग 1600 प्रकार के खनिजों का ज्ञान हो चुका है।
- खनिजों की आत्मनिर्भरता की दृष्टि से संयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम, भारत द्वितीय स्थान पर तथा रूस तृतीय स्थान पर है।

भारत में खनिजों का वितरण -

खनिज संसाधनों की मेखलायें (Belts of Mineral Resources)

भारत में खनिजों का वितरण समान नहीं हैं । भारत में पाये जाने वाले विविध प्रकार के खनिजों को उनके वितरण के अनुसार निम्न मेखलाओं में सीमाबद्ध किया जा सकताहैं।

1. बिहार-झारखण्ड - उड़ीसा-पश्चिम बंगाल मेखला :

✓ यह मेखला छोटा नागपुर व समीपवर्ती क्षेत्रों में फैली हुई हैं। यह मेखला लौह अयस्क मैंगनीज, ताँबा, अभ्रक, चूना पत्थर, इल्मेनाइट, फॉस्फेट, बॉक्साइट आदि खनिजों की दृष्टि से धनी हैं । झारखण्ड खनिज उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख राज्य है ।

2. मध्यप्रदेश – छत्तीसगढ़ – आंध्रप्रदेश -महाराष्ट्र मेखला:

✓ इस मेखला में भी लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, चूना पत्थर, ऐस्बेस्टॉस, ग्रेफाइट, अभ्रक, सिलिका, हीरा आदि बहुलता से प्राप्त होते हैं।

3. कर्नाटक - तमिलनाडु मेखला :

✓ यह मेखला सोना, लिग्नाइट, लौह अयस्क, ताँबा, मैंगनीज, जिप्सम, नमक, चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. रीवा अल्ट्रा सौर ऊर्जा परियोजना

- विश्व बैंक के द्वारा मध्य प्रदेश में बन रही रीवा अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा आंतरिक व्यवस्था को विकसित करने के लिए ऋण देगा।
- रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर संस्था इस प्रकार का ऋण प्राप्त करने वाली देश की पहली संस्था बन गई है।
- इससे 750 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा
- इस सौर परियोजना से मध्य प्रदेश को 14000 करोड़ की बचत होगी।
- इसके अलवा दिल्ली मेट्रो को भी विद्युत आपूर्ति की जाएगी/

3. सौभाग्य योजना

- इस योजना का उद्देश सभी घरों को बिजली प्रदान करना हैं, अर्थात् जिनके पास वर्तमान में बिजली नही है/ ये कनेक्शन गरीबों को मुफ्त में प्रदान किये जायेंगे/
- देश भर में योजना के संचालन के लिए नोडल एजेंसी होगी/

4. उजाला योजना

- यह सस्ते एलईडी बल्ब के वितरण की विश्व की सबसे बड़ी योजना है।
- ऊर्जा संरक्षण के लिए सस्ते एलईडी बल्बों को जन – जन तक पहुँचाने की बेहद सफल योजना भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है
- इस योजना को जहाँ भारत सरकार के EESL द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा, वहीं इसकी लोजिस्टिकल सपोर्ट के लिए ग्रीन ग्रोथ एशिया नामक गैर लाभकारी संगठन अपना सहयोग दे रहा है/

5. ऊर्जा गंगा परियोजना

- 24 अक्टूबर 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में केंद्र सरकार की अति महत्त्वाकांक्षी गैस पाइपलाइन परियोजना ऊर्जा गंगा का शिलान्यास किया/
- ऊर्जा गंगा परियोजना पूर्वी भारत के सात शहरों वाराणसी, राँची, कटक, पटना, कोलकाता, जमशेदपुर, भुवनेश्वर के लिए शहरी गैस वितरण परियोजना है/
- इस परियोजना में 2540 किमी. पाइपलाइन बिछाने का लक्ष्य रखा गया हैराज्य द्वारा संचालित गैस यूटिलिटी –गैस ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड इस परियोजना को क्रियान्वित कर रहा है/

अध्याय – 9

प्रमुख उद्योग और औद्योगिक विकास

- USA की सिलिकॉन वैली सेन-फ्रांसिस्को (उत्तरी कैलीफोर्निया) में स्थित है।
- ओसाका नगर जापानी सूती वस्त्र उद्योग (cotton textile industry) का प्रमुख केन्द्र है।
- सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द्र जलवायु तथा समुद्री समीर उपयुक्त मानी जाती है।
- विश्व में सूती वस्त्र उत्पादक सबसे बड़ा देश चीन है।
- रुर बेसिन (ruhr basin) जर्मनी देश का प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र है।
- ऊन (wool) का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है।
- विश्व में पोटाश उर्वरक का सर्वाधिक भंडार कनाडा देश में स्थित है।

औद्योगिक शहरों के उपनाम

औद्योगिक शहरों	उपनाम
गोर्की	रूस का डेट्रायट
पीथमपुर	भारत का डेट्रायट
ट्यूरिन	इटली का डेट्रायट
विंडसर	कनाडा का डेट्रायट
नागोया	जापान का डेट्रायट
शंघाई	चीन का मेनचेस्टर
अहमदाबाद	भारत का मेनचेस्टर
मिलान	इटली का मेनचेस्टर
ओसाका	जापान का मेनचेस्टर
कानपूर	उत्तर भारत का मेनचेस्टर
कोयम्बटूर	दक्षिण भारत का मेनचेस्टर
पिट्सवर्ग	विश्व की इस्पात नगरी
यावता	जापान का पीट्सबर्ग
टूला	रूस का पिट्सवर्ग
जमशेदपुर	भारत का पीट्सबर्ग
हैमिल्टन	कनाडा का बर्मिंघम

विश्व के प्रमुख औद्योगिक केंद्र

देश	लौह उद्योग के प्रमुख केंद्र
स.रा.अमेरिका	पीट्सबर्ग(विश्व की इस्पात राजधानी)
जापान	ओसाका, कोबे व क्योटो, नागासाकी, कावासाकी
रूस	मॉस्को, मेंग्नीटोगोसर्क, चेलियाविंस्क, टूला

देश	वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र
चीन	शंघाई, कैन्टन, वुहान, नानकिंग, चुगकिंग, बीजींग
ब्रिटेन	मेनचेस्टर, ब्रैडफोर्ड, डबीशायर, लीड्स
भारत	मुंबई, अहमदाबाद, कोलकाता, कोयम्बटूर, मदुरै

भारतीय उद्योग (Indian Industry)

I. स्वतंत्रता से पूर्व भारत में स्थापित उद्योग-

- लौह इस्पात उद्योगः- 1874 में कुल्टी (प. बंगाल) में पहला व्यवस्थित लौह इस्पात केन्द्र स्थापित किया गया ।
- **एल्युमिनियम उद्योगः-** 1837 में जे.के. नगर (प. बंगाल) में पहला एल्युमिनियम उद्योग स्थापित किया गया ।
- **सीमेन्ट उद्योगः-** भारत में प्रथम सीमेंट कारखाना वर्ष 1904 में गुजरात के पोरबंदर में स्थापित किया गया, परंतु सीमेंट का उत्पादन वर्ष 1904 में चेन्नई में स्थापित कारखाने में प्रारंभ हुआ ।
- **रसायनिक उद्योगः-** भारत में रसायनिक उद्योग की शुरूआत 1906 में रानीपेट (तमिलनाडु) में सुपर फॉस्फेट के यंत्र के साथ हुई ।
- **जहाजरानी उद्योगः-** 1941 में विशाखापट्नम में पहला जहाजरानी उद्योग लगाया गया जिसका नाम हिन्दुस्तान शिपयार्ड था ।
- **सुती वस्त्र उद्योगः-** 1818 में कोलकता में प्रथम सुती वस्त्र मील की स्थापना की गई जो असफल रही । 1854 में मुंबई में प्रथम सफल सुती वस्त्र मील की स्थापना डाबर द्वारा की गई ।
- **जूट उद्योगः-** जूट उद्योग की स्थापना 1854 में रिशरा (कोलकाता) में की गई ।
- **ऊनी वस्त्र उद्योगः-** भारत में पहली ऊनी वस्त्र मील की स्थापना 1876 में कानपुर में की गई ।
- वर्ष 1951-52 में GDP में औद्योगिक क्षेत्र का भाग 16.6 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2016-17 में बढ़कर 29.02 प्रतिशत हो गया तथा वर्तमान में यह लगभग 31 प्रतिशत हैं ।

भारत के प्रमुख विनिर्माण उद्योग

लौह इस्पात उद्योगः-

- वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन 2018 की रिपोर्ट के अनुसार लौह इस्पात उत्पादन में भारत चीन व अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर हैं ।
- 2003 के बाद से भारत स्पंज आयरन का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादन करता हैं ।
- फरवरी 2018 से भारत कच्चे इस्पात के उत्पादन में जापान को पीछे छोड़कर दूसरे पायदान पर आ गया हैं ।
- इस उद्योग में कच्चे माल के रूप में लौह अयस्क, मैंग्नीज, चूना पत्थर, कुकिंग कोयला एवं डोलामाइट का प्रयोग किया जाता हैं ।
- 1907 में साकची, झारखण्ड में जमशेदजी टाटा द्वारा लौह इस्पात उद्योग टाटा आयरन व स्टील कंपनी (TLSCO) की स्थापना की गई । इसे भारत में आधुनिक लौह इस्पात की शुरूआत माना जाता हैं ।
- भारत में पहली बार 1874 में कुल्टी, पं.बंगाल में 'बंगाल आयरन वर्क्स' की स्थापना हुई, जो अब बंगाल लौहा व इस्पात उद्योग में बदल गया हैं ।
- 1907 में जमशेदपुर में TISCO भारत में स्थापित पहली नीजी क्षेत्र की लौह इस्पात उद्योग की इकाई बनी ।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में लगाए गए कारखाने -

- राउरकेला (ओड़िशा):- जर्मनी के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- भिलाई (छत्तीसगढ़):- रूस के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- दुर्गापुर (प. बंगाल):- ब्रिटेन के सहयोग से स्थापित (1959 में स्थापना, 1962 से उत्पादन शुरू)

  नोटः- तीसरी पंचवर्षीय योजना में रूस की सहायता से 1966 में बोकारो (झारखण्ड) में लौह इस्पात कारखाने की स्थापना की गई ।

  1974 में सरकार ने स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAIL) की स्थापना की तथा इसे इस्पात उद्योग के विकास की जिम्मेदारी दी गई । 'सेल' के अधीन एकीकृत इस्पात संयत्रों की संख्या अब आठ (भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो, इस्को, विश्वेश्वरैया, विशाखापट्नम एवं सलेम) हो गई हैं ।

सीमेंट उद्योगः-

- वर्तमान में भारत सीमेंट उत्पादन में चीन के बाद विश्व में दूसरा स्थान रखता हैं ।
- देश में आधुनिक सीमेंट बनाने का कारखाना 1904 में चेन्नई में शुरू हुआ ।
- यह एक भार ह्रासी उद्योग है जिसमें एक टन उत्पादन के लिए 2.02 टन कच्चे माल की आवश्यकता होती हैं, जिसमें 1.6 टन केवल चूना पत्थर होता हैं ।
- इसके अपशिष्ट पदार्थ स्लैग कहलाते हैं ।
- मध्य प्रदेश में चूना पत्थर के सर्वाधिक संचित भण्डार होने कारण इस उद्योग का सर्वाधिक विकास मध्य प्रदेश में हुआ हैं ।
- सीमेंट उद्योग के सर्वाधिक कारखाने आंध्रप्रदेश में हैं ।
- सीमेंट उद्योग के सर्वाधिक कारखाने आंध्रप्रदेश में हैं।

रासायनिक उर्वरक उद्योगः-

- हरित क्रांति को सफल बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान इसी उद्योग का रहा ।
- भारत नाइट्रोजन उत्पादकों का दूसरा सबसे बड़ा तथा फॉस्फेट उर्वरकों का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक हैं
- भारत में पोटाश उर्वरकों का उत्पादन नहीं होता हैं।
- रसायनिक उर्वरकों के अन्तर्गत तीन प्रकार के उर्वरकों का उत्पादन होता हैं -
- नाइट्रोजन, फॉस्फेटिक व पोटश उर्वरक
- भारत की जलोढ़ मृदा में नाइट्रोजन की कमी के कारण यहाँ नाइट्रोजन उर्वरक की मांग व उत्पादन अधिक होता हैं।
- भारत में मुख्यतः 2 प्रकार के उर्वरकों का उत्पादन किया जाता है -

  (1) नाइट्रोजन आधारित उर्वरक
  (2) फॉस्फोरस आधारित उर्वरक

महानगरों (दिल्ली , मुम्बई , कोलकात्ता , चेन्नई) को जोड़ने का परिचालन किया जाएगा ।

भारत के रेल-मंडल एवं उनके मुख्यालय					
	रेल-मंडल	मुख्यालय		रेल-मंडल	मुख्यालय
1.	उत्तर रेलवे	नई दिल्ली	2.	पश्चिम रेलवे	चर्च गेट मुम्बई
3.	दक्षिण रेलवे	चेन्नई	4.	पूर्व रेलवे	कोलकाता
5.	मध्य रेलवे	मुम्बई सेन्ट्रल	6.	द.- मध्य रेलवे	सिकंदराबाद
7.	द. - पूर्व रेलवे	कोलकाता	8.	पूर्वोत्तर रेलवे	गोरखपुर
9.	उ.-पूर्वी मध्य रेलवे	मालेगाव	10.	पूर्व-मध्य रेलवे	हाजीपुर
11.	उत्तर - मध्य रेलवे	इलाहबाद (प्रयागराज)	12.	प.-मध्य रेलवे	जबलपुर
13.	द.-प. रेलवे	हुबली (कर्नाटक)	14.	उ.-प. रेलवे	जयपुर
15.	पूर्व तट रेलवे	भुवनेश्वर	16.	द.-पूर्व मध्य रेलवे	बिलासपुर
17.	कोलकाता मेट्रो	कोलकाता			

देश में तीन प्रकार के रेल मार्ग हैं		
प्रकार	पटरियों की चौड़ाई	लम्बाई
ब्रोड गेज	1.676 मी.	49820 किमी.
मीटर गेज	1.000 मी.	10621 किमी.
नेरो गेज	0.610 मी.	2886 किमी.

कोलकाता मेट्रो रेल सेवा –

- 1972 – मेट्रो रेलवे, कोलकाता की आधारशिला 29 दिसंबर को रखी गई।
- 1984 – 24 अक्टूबर को भारत की प्रथम मेट्रो के रूप में मेट्रो रेलवे, कोलकाता का शुभारंभ हुआ। 3.4 किमी. के विस्तार पर एस्प्लानेड से भवानीपुर (अब नेताजी भवन तक वाणिज्यिक सेवा का शुभारंभ हुआ।
- 1995 – 27 सितंबर को दमदम से टॉलीगंज तक 17 स्टेशनों के बीच 16.45 किमी. के संपूर्ण विस्तार पर वाणिज्यिक सेवा का आरंभ किया गया।

दिल्ली मेट्रो रेल सेवा –

- दिल्ली में सर्वप्रथम 25 दिसम्बर ,2002 को तीस हजारी से शहादरा के बीच शुरु हुई थी। इस परियोजना में कोरिया एवं जापानी कंपनी का सहयोग मिला है।
- विश्व का सबसे लम्बा रेलमार्ग ट्रांस, साइबेरियन रेलमार्ग है, जो लेनिनग्राड से ब्लाडीवोस्टक (रूस) तक 9297 किमी. लम्बा है।

- भारत समेत एशिया और यूरोप के 28 देशों ने ट्रांस एशिया रेलवे नेटवर्क पर समझौता किया है, जिसकी लम्बाई 14000 किमी. होगी।
- देश में किसी भी रेलमंत्री द्वारा अब तक सर्वाधिक बार रेल बजट पेश करने का रिकार्ड जगजीवन राम के नाम है।
- भारतीय रेल को 17 जोन (मंडल) में विभाजित किया गया है। प्रत्येक जोन का प्रधान महाप्रबंधक होता है।

गतिमान एक्सप्रेस

- गतिमान एक्सप्रेस ट्रेन को रेलमंत्री ने 5 अप्रेल, 2016 को हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से रवाना किया जो आगरा कैंट तक 187 किमी. की दूरी 100 मिनट में तय करती है ।
- यह रेलगाड़ी देश की पहली हाई स्पीड ट्रेन होगी ।
- यह रेलगाड़ी में सुरक्षा के साथ परिचायिका तथा वाई - फाई के साथ आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित है ।

शान - ए - पंजाब एक्सप्रेस

- यह रेल अमृतसर से दिल्ली के मध्य चलती है। जिसका शुभारम्भ 8 अप्रेल, 2016 को हुआ , इसके सभी 21 कोचों में सीसीटीवी केमरे है ।

हिम सागर एक्सप्रेस

- देश की सबसे लम्बी दूरी 3729 किमी . तय करने वाली जो कन्याकुमारी से जम्मूतवी तक चलती है ।

टेल्गो ट्रेन

- 2 मार्गों पर टेल्गो ट्रेन चलती है ।

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश

गुलाम वंश से लेकर लोदी वंश

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे –

गुलाम वंश के शासक –

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी । इसने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- ऐबक का अर्थ होता है चंद्रमुखी ।
- ऐबक के राजवंश को कुतुबी राजवंश के नाम से जन जाता है ।
- मुहम्मद गौरी ने ऐबक को अमीर-ए-आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- 1192 ई. के तराईन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की यह उपाधि इसे मुहम्मद गौरी ने दी थी ।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया (खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे ।)खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ में दिल्ली के पास को सैनिक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास) के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया ।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है ।
- भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को मान जाता है ।
- भारत में मुस्लिम राज्य का संस्थापक मुहम्मद गौरी को माना जाता है । स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है ।
- कुतुबुद्दीन ऐबक के दरबार में हसन् निजामी एवं फख-ए-मुदब्बिर आदि प्रसिद्ध विद्वान थे ।
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम -"अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बनवाया । तथा 'कुतुबमीनार 'का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरु करवाया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। कुतुबमीनार शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया है ।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी)कहा गया है ।
- इतिहासकार मिन्हाज ने कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी दानशीलता के कारण हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है ।
- प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था ।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता है।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता है ।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। जिसने दिल्ली को अपने राजधानी बनाया ।
- इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्के टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)
- इल्तुतमिश यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक –

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था। इक्ता का अर्थ है – धन के स्थान पर तनख्वाह के रूप में भूमि प्रदान करना ।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण - इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।

- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण । यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।
- इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये ।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उस-सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला ।
- अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- इल्तुतमिश से सम्बन्धित 'हश्म-ए-कल्ब 'या कल्ब-ए-सुल्तानी सुल्तान द्वारा स्थापित सेना को कहा जाता था ।
- इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कह जाता है, उसने सुल्तानगढ़ी का निर्माण करवाया ।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है ।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।
- इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में स्थित है जो एक कक्षीय मकबरा है ।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई).

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम जलॉलात उद-दिन-रजिया था)का जन्म -1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत -उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की ।
- रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार की कारवाई में हिस्सा लिया।
- दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया। हालांकि वजीर जुनैदी उससे प्रसन्न नहीं था इसलिए इस समय उसने ही रजिया के सिंहासनारोहण का विरोध किया। रजिया ने उसके बाद वजीर का पद ख्वाजा मुहाजबुद्दीन को दिया।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।
- 'सुल्तान रजियत अल दुनिया वाल दीन बिन्त अल सुल्तान' के रूप में सिक्के ढ़ाले गये।
- शासक बनने पर रजिया ने उद्मत-उल-निस्वां की उपाधि धारण की।
- रजिया ने प्रथम अभियान 'रणथम्भौर' पर किया तदुपरान्त ग्वालियर पर हमला किया गया। हालांकि दोनों अभियान असफल रहे।
- रजिया ने महिला वस्त्र त्यागकर पुरुषों के वस्तु काबा (कुर्ता) एवं कुलाह(पगड़ी) धारण करने लगी।
- रजिया ने अल्तुनिया से शादी कर ली। अक्टूबर 1240 ई. में कैथल में डकैतों ने रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या कर दी। और इस तरह 3 वर्ष 6 माह और 6 दिन तक शासन करने वाली रजिया का अन्त हुआ।''

मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240-1242 ई)

- बहरामशाह एक मुस्लिम तुर्की शासक था, जो दिल्ली का सुल्तान था। बहरामशाह गुलाम वंश का था। रजिया सुल्तान को अपदस्थ करके तुर्की सरदारों ने मुइजुद्दीन बहराम शाह को दिल्ली के तख्त पर बैठाया (1240-1242 ई)
- यह इल्तुतमिश का पुत्र तथा रजिया का भाई था।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-1246 ई)

- मसूद का शासन तुलनात्मक दृष्टि से शांतिपूर्ण रहा। इस समय सुल्तान तथा सरदारों के मध्य संघर्ष नहीं हुए।
- वास्तव में यह काल बलबन की 'शांति निर्माण' का काल था।

नासिरुद्दीन महमूद (1246-1265 ई)

- यह एक तुर्की शासक था, जो दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। यह भी गुलाम वंश से था।
- महमूद के शासनकाल में समस्त शक्ति बलबन के हाथों में थी। प्रारंभ में बलबन चहलगामी का सदस्य था।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन महमूद से कर दिया। सुल्तान ने बलबन को सेना पर पूर्ण नियंत्रण के साथ नायब-ए-ममलिकात का पद दिया।
- सद्र-उस-सुदूर धार्मिक विभाग से संबंधित है ।
- अमीर-एक-आखूर अश्वशाला का प्रधान होता था ।
- सर-ए-जानदार सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख होता था ।

ग्यासुद्दीन बलबन 1266-1287

- बलबन ने बलबनी वंश की स्थापना की ।
- इल्तुतमिश ने बलबन को ग्वालियर विजय के बाद खरीदा और उसकी योग्यता से प्रभावित हो कर उसे खासदार का पद सौंपा दिया।
- बलबन ने गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम सुल्तान के पद की गरिमा कायम की और दिल्ली सल्तनत की सुरक्षा के प्रबंध किया ।
- जो इल्तुतमिश ने चालीसा दल बनाया था उसे बलबन ने नष्ट कर दिया।
- बलबन दिल्ली सल्तनत का एक पहला ऐसा व्यक्ति था, जो सुल्तान न होते हुए भी सुल्तान के छत्र का प्रयोग करता था
- बलबन पहला शासक था जिसने सुल्तान के पद और अधिकारों के बारे में विस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किये।

अध्याय – 3

सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन (19वीं सदी)

- भारत में राष्ट्रीय जागरण का काल 19 वीं शताब्दी का मध्य तथा उतरार्द्ध माना जाता है ।
- भारत में राष्ट्रीय जागरण के बारे में श्रीमति एनीबेसेंट ने कहा था की इस विराट आंदोलन के पीछे शताब्दियों का इतिहास है ।
- भारतीय इतिहास में 18 वीं शताब्दी को 'अंधकार का युग' कहा जाता है ।
- राजा राममोहन राय को आधुनिक भारत का पिता तथा नये युग का अग्रदूत कहा जाता है ।
- राजा राममोहन राय को पुनर्जागरण का 'सुबह का तारा 'कहा जाता है ।
- ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय द्वारा 20 अगस्त 1828 ई. को कलकत्ता में की गयी । जिसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह, वेश्यागमन जातिवाद अस्प्रश्यता आदि को समाप्त करना था।
- ब्रह्म समाज आंदोलन का मुख्य सिद्धांत ईश्वर एक है ।
- राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है ।
- राजा राममोहन राय की प्रमुख कृतियों में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' प्रमुख है । इन्होंने संवाद कौमुदी (बांग्ला भाषा) तथा मिरातुल अखबार (फारसी भाषा) का भी सम्पादन किया ।
- राजा राममोहन राय ने 1815 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की 1815 ई. में इन्होंने वेदान्त कॉलेज के स्थापना की ।
- इन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपना समर्थन दिया ।
- कालांतर में देवेन्द्रनाथ टैगोर 1818 ई. 1905 ई. ने ब्रह्म समाज को आगे बढाया इनके द्वारा ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया गया ।
- लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया था।
- 1829 ई. में विलियम बैंटिक ने भारत में सती प्रथा पर रोक लगा दी इस कार्य में सहयोग देने में राजा राममोहन राय की प्रमुख भमिका थी । राममोहन राय को राजा की उपाधि मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने प्रदान की थी ।
- राजा राममोहन राय की समाधी ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में स्थित है ।
- **आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे ।**
- इन्होंने 1875 ई. में बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी । आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों को पुनःहिन्दू धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा देना था
- स्वामी दयानंद सरस्वती को बचपन में मूलशंकर के नाम से जाना जाता था । इनके गुरु स्वामी विरजानन्द थे ।
- इन्होंने अपने उपदेशों में मूर्ति पूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद, पशुबलि, श्राद्ध, जंत्र, तंत्र, मंत्र, झूठे कर्मकांड, आदि की आलोचना की तथा पुनः 'वेदों की ओर लोटो का नारा दिया था ।
- इनके विचारों का संकलन इनकी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है जिसकी रचना इन्होंने हिंदी में की थी ।
- सामाजिक सुधार के क्षेत्र में इन्होंने छुआछुत एवं जन्म के आधार पर जाति प्रथा की आलोचना की ।
- भारत का समाज सुधारक मार्टिन लूथर किंग दयानंद सरस्वती को कहा जाता है ।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज शब्द का प्रयोग किया और हिंदी को राष्ट्र भाषा माना ।
- बंगाली नेता राधाकांत देव ने सती प्रथा का समर्थन किया था ।
- स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा चलाये गए शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत उन लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में आने का मौका मिला जिन्होंने किसी कारणवश कोई और धर्म स्वीकार कर लिया था ।
- समाज सुधारक महादेव गोविन्द रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है ।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायियों में लाला हंसराज ने 1886 ई. में लाहौर में 'दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 ई. में हरिहर के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की ।

भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी

- भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई. में मैंडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल आल्कोट ने न्यूयॉर्क में की थी ।
- जनवरी 1882 ई. में वे भारत आये तथा मद्रास में अड~यार के निकट मुख्यालय स्थापित किया ।
- भारत में इस आंदोलन की गतिविधियों को फेलाने का श्रेय श्रीमती एनीबेसेंट को दिया जाता है ।
- 1898 ई. में उन्होंने बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 ई. में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बन गया । आयरलेंड की होमरूल लीग की तरह बेसेंट ने भारत में होमरूल लीग की स्थापना की ।
- स्वामी विवेकनद की मुख्य शिष्या सिस्टर निवेदिता थी ।
- वास्तव में भारत की एकता इसकी विभिन्नताओं में ही निहित है । हिन्दू धर्म एवं संस्कृति ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में सदा से बांध रखा है । यह विचार बीसेंट स्मिथ का है ।
- 1893 ई. में शिकागो सम्मलेन में स्वामी विवेकान्द ने भाग लिया था ।
- रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी वेवेकानंद ने 1897 ई. में की थी ।
- रामकृष्ण आंदोलन के मुख्य प्रेरक स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र नाथ दत्त) को दिया जाता है ।

- 1893 ई. में 14 वर्ष के बाद योगी राज अरविन्द घोष 1872 -1950 ई. की भारत भूमि पर वापसी हुई । (1893 ई. में उन्होंने एक लेखमाला न्यू लैम्प फॉर ओल्ड ") प्रकाशित किया ।
- राजनैतिक सुधारों को लेकर विरोध करने वाले पहले भारतीय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे ।
- प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 ई. में केशव चन्द्र सेन के सहयोग से डॉ. आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में की थी ।
- भारत सेवक समाज सर्वेन्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसायटी की स्थापना 1905 ई. में गोपाल कृष्ण गोखले ने बम्बई में की थी ।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह को दिल्ली चलो सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है । व्यक्तिगत सत्याग्रह की शुरुआत पवनार से 17 अक्टूबर 1940 से आरम्भ हुई थी ।
- सत्यशोधक समाज की स्थापना ज्योतिबा फुले द्वारा की गयी थी ।
- सम्पति के निष्कासन के सिद्धांत के प्रतिपादक दादा भाई नौरोजी थे ।
- भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र हिन्दू पैट्रियॉट था ।
- बहिष्कृत भारत पत्रिका का संबंध डॉ. भीमराव अम्बेडकर से था ।
- महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित हरिजन सेवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष घनश्याम दास बिडला थे ।
- भारत में यंग बंगाल आंदोलन प्रारम्भ करने का श्रेय हेनरी विवियन डिरोजियो को है एंग्लो -इंडियन डिरोजियो कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज के अध्यापक थे।
- स्वदेशवाहिनी नामक पत्रिका के सम्पादक के. रामकृष्ण पिल्लै थे ।
- डिरोजियो ने ईस्ट इण्डिया नामक दैनिक पत्र का भी सम्पादन किया
- हेनरी विवियन डिरोजियो को आदुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना गया है ।
- महात्मा गाँधी ने 1924 ई. में बेलगाँव कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्षता की थी ।
- इंडियन नेशन अखबार का प्रकाशन पटना से होता था।
- साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना 1878 ई. में कलकत्ता में शिवनाथ शास्त्री, आनंद मोहन बोस ने की थी ।
- हाली पद्धति बँधुआ मजदूरी से संबंधित है ।
- विधवा पुनर्विवाह को कानूनी रूप से वैध करवाने में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।
- बहुजन समाज के संस्थापक मुकुंद राव पाटिल थे ।
- पंडित रामाबाई सरस्वती द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की गयी।
- भारत में मुस्लिम सुधार आंदोलन का प्रवर्तक सर सैयद अहमद खान को माना जाता है ।
- ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को चुनौती देने के लिए आत्म सम्मान आंदोलन वी. रामास्वामी नायकर के द्वारा चलाया गया ।
- गुलामगिरी पुस्तक के लेखक ज्योतिबा फुले थे ।
- धर्म सभा की स्थापना 1829 ई. में कलकत्ता में राधाकांत देव ने की थी ।
- द्वारकानाथ टैगोर द्वारा वर्ष 1838 में स्थापित भारत की प्रथम राजनैतिक संस्था लैंडहोल्डर्स सोसायटी थी।
- वन्देमातरम समाचार पत्र 1909 ई. में प्रकाशित किया गया इसके संस्थापक लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा थे ।
- महात्मा गाँधी केवल एक बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 27 दिसम्बर 1885 को मुम्बई में हुआ था ।
- वहाबी आंदोलन को भारत में सबसे ज्यादा प्रचारित करने का श्रेय सैयद अहमद बरेलवी एवं इस्लाम हाजी मौलवी मोहम्मद को दिया जाता है ।

<u>उदारवादी आंदोलन</u>

- भारतीय राष्ट्रीयता का जनक उदारवादियों को कहा जाता है ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जनक ए.ओ.ह्युम को कहा जाता है ।
- इंडियन नेशनल यूनियन ने दिसम्बर 1884 में एक कॉन्फ्रेंस को बुलाने का निर्णय लिया था, जिसमें इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की गयी ।
- एनी बेसेंट ने कॉमनवील साप्ताहिक पत्रिका के माध्यम से स्वशासन की माँग की ।
- मोहम्मद अली जिन्ना को हिन्दू-मुस्लिम एकता का दूत सरोजनी नायडू ने कहा था ।
- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वॉल्व का सिद्धांत लाला लाजपत राय के द्वारा दिया गया था।
- अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को हुई थी इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी थे ।
- भारत के तेजस्वी पितामह के नाम से दादाभाई नौरोजी जाने जाते हैं ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने की थी ।
- ये उदारवादी वैधानिक तरीके में विश्वाश करते थे ।
- बाल गंगाधर तिलक को अशांति का जनक वेलेंटाइन शिरोल ने कहा था ।
- फेबियन आंदोलन का प्रस्ताव एनी बेसेंट ने दिया था ।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का वायसराय लॉर्ड डफरिन थे ।
- कांग्रेस के उदारवादी नेताओं की कार्य प्रणाली शांतिपूर्ण प्रतिरोध थी ।
- लाला लाजपत राय के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अंगेजी साम्राज्य को खतरे से बचाना था ।
- यंग इंडिया नामक पुस्तक के रचियता लाला लाजपत राय थे ।

4.	गोपाल स्वरूप पाठक	1969-1974
5.	बी. डी. जत्ती	1974-1979
6.	न्यायमूर्ति मो.हिदायतुल्ला	1979-1984
7.	आर. वेंकटरमण	1984-1987
8.	डॉ. शंकर दयाल शर्मा	1987- 1992
9.	के. आर. नारायण	1992- 1997
10.	कृष्णकांत	1997- 2002
11.	भैरो सिंह शेखावत	2002-10.08.2007
12.	हामिद अंसारी	11.08.2007-11.08.2017
13.	एम. वेंकैया नायडू	11.08.2017---

- उपराष्ट्रपति बनने से पहले डॉ. एस. राधाकृष्णन सोवियत संघ में राजदूत थे ।
- राज्य सभा का सभापति उपराष्ट्रपति होता है ।
- भारत के उपराष्ट्रपति को पद से हटाने सम्बन्धी प्रस्ताव केवल राज्य सभा में लाया जा सकता है ।
- उपराष्ट्रपति का वेतन भारत भारत की संचित निधि पर भारित होता है ।

अध्याय – 16

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते है - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है ।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjournment motion) लाने का उद्देश्य सार्वजनकि महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है ।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद	
अनु.	सम्बंधित विषय – वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की सरंचना
81	लोक सभा की सरंचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुनः समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बोधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभासण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायवादी के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना ।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना
93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना ।
97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान

100	दोनों सदनों में मतदान, रिक्तियों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरर्हताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरर्हत किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड ।

लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन / लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित है ।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं । इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं ।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।

- **लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:**
  - वह भारत का नागरिक हो ।
  - उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो ।
  - वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
  - वह पागल / दिवालिया न हो ।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है,
- किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहुत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश	80
2. महाराष्ट्र	48
3. पश्चिम बंगाल	42
4. बिहार	40
5. तमिलनाडु	39
6. मध्य प्रदेश	29
7. कर्नाटक	28
8. गुजरात	26
9. राजस्थान	25
10. आंध्र प्रदेश	25
11. ओडिशा	21
12.केरल	20
13. तेलंगाना	17
14. असम	14
15. झारखण्ड	14
16. पंजाब	13
17. छत्तीसगढ़	11

क्षेत्र दिल्ली	3
22.असम	1
23.गोवा	1
24.मणिपुर	1
25.मेघालय	1
26.मिजोरम	1
27.नागालैंड	1
28.पुदुचेरी	29
29. सिक्किम	1
30.त्रिपुरा	1
31.अरुणाचल प्रदेश	1

- राज्यसभा का उपसभापति राज्यसभा के सभापति को त्यागपत्र सौंपता है।
- राज्यसभा का सभापति भारत के राष्ट्रपति को अपना त्याग पत्र सौंपता है।
- उपाध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के अध्यक्ष के बाद होता है।
- जब अध्यक्ष या उपाध्यक्ष का पद रिक्त होता है तो सभापति द्वारा निर्धारित तालिका के सदस्य द्वारा सदन की अध्यक्षता नहीं की जा सकती है। इस समय राष्ट्रपति द्वारा सदन के अध्यक्ष की नियुक्ति की जाती है।
- पहली बार 1969 में विपक्ष के नेता को मान्यता दी गई थी। 1977 में इसे संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई। आईवर जेनिंग ने इसे वैकल्पिक प्रधानमंत्री की संज्ञा दी है।
- लोकसभा में राज्यवार सीटो का आवंटन 1971 की जनगणना पर आधारित है ।
- 2026 तक राज्यसभा व लोकसभा सीटों की संख्या अपरिवर्तित रहेगी ।
- वर्तमान में तेलंगाना की "मलकांन गिरी" सर्वाधिक मतदाताओं वाली लोकसभा सीट है।
- लक्षद्वीप में न्यूनतम मतदाता हैं।
- अनुच्छेद 19 के अनुसार राज्यसभा को नयी "अखिल भारतीय योजना के गठन का अधिकार है।
- अनुच्छेद 249 के अनुसार 2/3 बहुमत से किसी विषय को राष्ट्रीयता महत्वता का घोषित कर सकती हैं इस स्थिति में उस पर कानून बनाने का अधिकार संसद को मिल सकता है ।
- मंत्रिपरिषद् लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
- धन विधेयक, वित्त विधेयक लोकसभा में पुन: गठित के अनुसार किये जाते हैं।

<u>संयुक्त बैठक अनुच्छेद- 108</u>

- यदि कोई विधेयक एक सदन द्वारा पारित करने के बाद दूसरे सदन द्वारा खारिज कर दिया जाए अथवा 6 माह तक रोक लिया जाए तो इस स्थिति में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलायी जा सकती है। संयुक्त बैठक में वह विधेयक साधारण बहुमत से पारित किया जा सकता है।
- लोकसभा तथा राज्यसभा की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा के अध्यक्ष द्वारा की जाती है।
- 1954 में H.G. बुड्गतल ने रिश्वत लेने के आधार पर लोकसभा से इस्तीफा लिया था ।
- ऑपरेशन चक्रव्यूह व ऑपरेशन दुर्योधन के दौरान भी लोकसभा के सदस्यों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी।
- अनुच्छेद - 105 के तहत सांसदों को विशेषाधिकार प्रदान किए गए हैं । सांसदों को संसद में या उसकी बैठकों में अभिव्यक्ति की असीमित स्वतंत्रता दी गयी है। संसद तथा संसदीय बैठकों में कही गई कोई बात पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता है।
- सत्र के 40 दिन पूर्व या 40 दिन पश्चात् दीवानी मसलो पर सांसदों पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता ।
- सत्र के दौरान आपराधिक मसलो में भी स्पीकर की अनुमति के बगैर सांसदों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ।
- **कोरम** – किसी भी सदन की बैठक उस स्थिति में संचालित अनु. 100 (iii) की जा सकती हैं, जब सदन की कुल संदस्य संख्या का 10% उपस्थित हों। यही कोरम है ।
- प्रत्येक सदन में सबसे बड़े विपक्षी दल को जिसे कम से कम 10% सीटे प्राप्त हों, विपक्ष का नेता घोषित किया जाता हैं ।
- 1977 से विपक्ष के नेता को कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया था ।
- 1966 में सर्वप्रथम संगठन कांग्रेस के राम सुमद्र सिंह को विपक्ष का नेता घोषित किया था।
- 1977 में लोकसभा में y-B-Chavan तथा राज्यसभा में कमलापति त्रिपाठी को विपक्ष का नेता घोषित किया गया।
- संचेतक का मुख्य कार्य अपने दल में अनुशासन बनाएं रखना है। दल-बदल विरोधी कानून उसी निर्देशो पर आधारित होती है।
- संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम 6 माह का अवकाश हो सकता है।
- संसद की वर्ष में 90 दिन बैठक होनी चाहिए ।
- संसद का मुख्य कार्य कानून का निर्माण करना है। संसद की कार्यवाही को 3 भागों में बाटा जा सकता है।
  (1) प्रश्नकाल – (11-12 बजे)
  (2) शून्यकाल (12-1 बजे)
  (3) मुख्य कार्यवाही (2-6 बजे)
- संसद की कार्यवाही का प्रथम घंटा प्रश्नकाल(question hour) कहलाता है ।
- संसदीय व्यवस्था में शून्य काल (zero hour) भारत की देन है ।
- लोकसभा में शून्य काल की अवधि अधिक से अधिक एक घंटे की होती है ।
- यदि कोई विधेयक लोकसभा द्वारा पारित है, परन्तु राज्यसभा में विचारधीन है, तथा राज्यसभा भंग हो गयी हों, तो विधेयक व्यपगत (समाप्त) हो जाता है।

- यदि बिल राज्य सभा में विचारधीन हो, राज्यसभा द्वारा पारित होकर लोकसभा में विचारधीन हो तथा लोकसभा भंग हो जाती है। तो विधेयक व्यपगत नहीं होता।
- यदि विधेयक राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के लिए भेज दिया गया है, तथा इन दोनों सदनों द्वारा पारित किया जा चुका है, तथा लोकसभा भंग हो जाती है। तो विधेयक व्यपगत नहीं होता।
- यदि विधेयक दोनों सदनों में मतभेद हों, परन्तु संयुक्त बैठक बुला ली गयी हो तो विधेयक व्यपगत नहीं होता, भले ही लोकसभा भंग हो जाए ।

संसद में प्रस्तुत होने वाले प्रमुख प्रस्ताव

- अनुच्छेद 75 (iii) के अनुसार विश्वास-मत का जन्म हुआ। इस अनुच्छेद के अनुसार मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
- विश्वास प्रस्ताव प्रधानमंत्री के द्वारा लोकसभा में रखा जाता है।
- अब तक 3 प्रधानमंत्री विश्वास मत हासिल न करने के आधार पर अपदस्थ हो चुके हैं।
  - V-P Singh (1990)
  - HD देवगौड़ा (1997)
  - अटल बिहारी बाजपेयी (1997)
- सर्वप्रथम चरण सिंह (1979) को विश्वास मत साबित करने को कहा गया।
- इसके पूर्व राष्ट्रपति को अभिभाषण प्रस्ताव को ही विश्वास मत मान लिया जाता है।
- अविश्वास प्रस्ताव - "भारतीय संविधान के अनुच्छेद 75 (iii) के आधार पर इसका जन्म हुआ । यह विपक्ष (विरोधी पार्टी) द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता है।
- विपक्ष, इसके लिए कुल सदस्यो का कम से कम 10% प्रस्ताव रखते हैं ।
- अविश्वास प्रस्ताव 19 दिन के नोटिस पर ही प्रस्तुत किया जा सकता है ।
- 1963 में पहला अविश्वास प्रस्ताव JB-कृपलानी द्वारा रखा गया था ।
- अब तक कोई भी अविश्वास प्रस्ताव लोकसभा द्वारा पारित नहीं किया जा सका ।
- विश्वास व अविश्वास प्रस्ताव के मध्य कम से कम 6 माह का अन्तर जरूर होना चाहिए।

निन्दा- प्रस्ताव भी अनुच्छेद 75 (iii) से प्रेरित है, यह विपक्ष द्वारा लोकसभा में रखा जाता है, किसी एक मंत्री के निंदा प्रस्ताव पारित होने पर सम्पूर्ण मंत्री परिषद् को त्यागपत्र देना पड़ता है ।

ध्यान- आकर्षण प्रस्ताव लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता है, इसके तहत किसी विशेष मुद्दे पर सदन का ध्यान आकर्षित किया जाता है ।

कामरोको प्रस्ताव प्रस्ताव के मध्य चल रही कार्यवाही को रोककर किसी अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा की जाती है, यह दोनों सदनों में लाया जा सकता है ।

- **कटौती प्रस्ताव(cut motion)** को समापन प्रस्ताव (closure motion) के नाम से भी जाना जाता है ।
- विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव दोनों सदनों में लाया जा सकता है ।
- संसद में दो प्रकार की समितियाँ अस्तित्व में होती हैं।
  1. तदर्थ समिति
  2. स्थायी समिति
- स्थायी समितियाँ वर्ष भर अस्तित्व में रहती हैं । जिनमें दो समितियाँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं ।
- लोक लेखा समिति
- अनुमान समित

लोक लेखा समिति इसमें कुल 22 सदस्य होते हैं जिसमें 15 लोकसभा से, 7 राज्यसभा से लिए जाते हैं ।

- इसका कार्यकाल 1 वर्ष का होता है (30 अप्रैल से 31 मई)
- इस समिति का मुख्य कार्य C.A.G. 'रिपोर्ट के आधार पर सार्वजनिक लेखकों की जाँच करना होता है। समिति का कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है।
- (अनुमान समिति | आकलन / प्राकलन समिति
- यह लोकसभा की समिति है।
- इसमें कुल 30 सदस्य होते हैं।
- इस समिति का कार्य बचते के उपाय सुझाना है।
- इसका अध्यक्ष सत्तादल का वरिष्ठ नेता होता है।
- समिति का कार्यकाल 1 मई से 30 अप्रैल (1 साल) का होता है ।
- कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है ।
- इसे अधिकारियो की मित्र- समिति भी कहते हैं ।

सार्वजनिक उपक्रम समिति

- "इसमें सदस्यों की कुल संख्या 15 होती है। 10 लोकसभा व 5 राज्यसभा से ।
- यह समिति व सार्वजनिक उपक्रमों के प्रबंधन में सुधार के सुझाव देती है।

कार्य मन्त्रणा समिति

- संसद के दोनों सदनों की अपनी - अपनी कार्य-मंत्रणा समितियाँ होती हैं । जिनका अध्यक्ष स्पीकर / चेयरमैन होता है ।
- इस समिति में 10- सदस्य होते हैं, प्रमुख दलों के संसदीय दल के नेता होते हैं, इस समिति का मुख्य दायित्व सदन की कार्य-सूची का निर्धारण करना होता है।

Lame Duck -यह अमेरिकी (U.S.A) अवधारणा है, इस अवधारणा के तहत संसद की बैठक में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया जा सकता है। अमेरिका में कार्यकाल समाप्त होने के पहले ही संसदीय चुनाव करा लिया जाता है। जबकि जिन सदस्यों का कार्यकाल शेष है, उनकी आखरी बैठक इसके बाद होती है। इस बैठक में कामचलाऊ मुद्दों पर भी चर्चा की जाती है। यहीं Lame Duck Session हैं ।

- बजट - वार्षिक वित्तीय विवरण, अनुच्छेद-112 से सम्बन्धित है ।

अध्याय – 8

स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार

वित्तीय बाजार - वह बाजार, जहाँ वित्तीय प्रपत्र ख़रीदे तथा बेचे जाते है, वित्तीय बाजार कहलाता है।
कैपिटल मार्केट में निवेश करने के कई तरीके हैं, जैसे - शेयर, बांड्स, डिबेंचर, म्यूचुअल फंड या निवेश की अन्य प्रतिभूतियाँ (सिक्यूरिटीज) इत्यादि।

समय के आधार पर वित्तीय बाजार दो प्रकार के होते है-

(1) **मुद्रा बाजार -** वह बाजार, जहाँ एक वर्ष से कम अवधि के लिए वित्तीय लेन-देन हो, मुद्रा बाजार कहलाता है। जैसे - Treasury bill, Commercial Paper, Money at call ।

(2) **शेयर बाजार/पूंजी बाजार -** वह बाजार, जहाँ एक वर्ष से अधिक अवधि के लिए वित्तीय लेन-देन होता है, पूंजी बाजार कहलाता है। जैसे – अंश (Share), ऋणपत्र (Debenture), Bond

- शेयर किसी कंपनी में आंशिक भागीदारी (स्वामित्व) प्राप्त करने का तरीका है।
- किसी कंपनी के शेयर खरीदने का तात्पर्य है कि व्यक्ति उस कंपनी का आंशिक हिस्सेदार बन रहा है। इस प्रकार के निवेश में कंपनी की हिस्सेदारी से जुड़े फायदे हैं तो कंपनी के व्यापार से जुड़े खतरे भी शामिल होते हैं।

सरल भाषा में

- **शेयर (Share)** को स्वामित्व की एक इकाई के रूप में संदर्भित किया जाता है जो कंपनी की पूंजी के बराबर अनुपात का प्रतिनिधित्व करता है। एक शेयर शेयरधारकों को कंपनी के लाभ और हानि पर एक समान दावे का हक देता है।
- वह निवेशक, जो किसी कंपनी का शेयर खरीद लेता है, तब वह उस कंपनी का ' शेयर होल्डर ' कहलाता है।
- दूसरे शब्दों में, शेयर की खरीदारी को 'इक्विटी की खरीदारी 'भी कहा जाता है तथा शेयर होल्डर को **इक्विटी होल्डर या इक्विटी शेयर होल्डर** भी कहा जाता है।
- शेयर उस कंपनी के स्वामित्व की एक इकाई का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ से आपने इसे खरीदा था।

उदाहरण के लिए, अगर आपने किसी कंपनी ABC का 10 शेयर 200 रुपये प्रत्येक शेयर खरीदा तो आप उस ABC कंपनी के शेयरधारक बन जाते हैं।

शेयर बाजार दो प्रकार के होते हैं -

(a) **प्राथमिक शेयर बाजार (Primary share market) -**

- प्राथमिक बाजार वह है, जहां कंपनियाँ पहली बार जनता को नए स्टॉक और बॉन्ड बेचती हैं।
- एक कंपनी धन जुटाने के लिए प्राथमिक बाजार में प्रवेश करती है। कंपनी या सरकार आईपीओ की प्रक्रिया द्वारा प्राथमिक बाजार में शेयर जारी करके धन जुटाती है।
- इस बाजार का कोई निश्चित स्थान होना आवश्यक नहीं है।
  उदाहरण - IPO (Initial Public Offer)
  FPO (Further/Follow on Public Offer)
- प्राथमिक शेयर बाजार में मुद्दा सार्वजनिक या निजी प्लेसमेंट के माध्यम से हो सकता है। मुद्दा सार्वजनिक होता है, जब शेयरों का आवंटन (Allotment)) 200 से अधिक व्यक्तियों को किया जाता है, मुद्दा निजी होता है, जब आवंटन (Allotment) 200 से कम व्यक्तियों को किया जाता है।
- प्राथमिक शेयर बाजार में जो भी प्रतिभूतियाँ बिकने के लिए आती है, वे मूल रूप से ऐसी प्रतिभूतियाँ होती है, जिनका स्वामित्व निर्गत करने वाली कंपनी के पास होता है।
- प्राथमिक शेयर बाजार में किसी शेयर की कीमत फिक्स्ड प्राइस या बुक बिल्डिंग इश्यू पर आधारित हो सकती है, जारीकर्ता द्वारा निश्चित मूल्य तय किया जाता है और प्रस्ताव दस्तावेज में उल्लिखित किया जाता है।
- **बुक बिल्डिंग** वह जगह है, जहां निवेशकों की मांग के आधार पर किसी मुद्दे की कीमत का पता लगाया जाता है।

(b) **द्वितीयक शेयर बाजार (Secondary share market)**

- प्राथमिक बाजार में खरीदे गए शेयरों को द्वितीयक बाजार में बेचा जा सकता है।
- द्वितीयक बाजार काउंटर (OTC) और एक्सचेंज ट्रेडेड मार्केट के माध्यम से संचालित होता है।
- ओटीसी बाजार अनौपचारिक बाजार हैं, जिसमें दो पक्ष भविष्य में तय किए जाने वाले विशेष लेन-देन पर सहमत होते हैं। एक्सचेंज ट्रेडेड मार्केट अत्यधिक विनियमित होते हैं। इसके अलावा इसे नीलामी बाजार के रूप में कहा जाता है, जिसमें सभी लेनदेन विनिमय के माध्यम से होते हैं।
- इस तरह से हम कह सकते है कि द्वितीयक बाजार वह जगह है जहां निवेशक पहले से ही अपनी प्रतिभूतियों को खरीदते और बेचते हैं। यह आमतौर पर ज्यादातर लोग "स्टॉक मार्केट" के रूप में सोचते हैं, हालांकि स्टॉक को प्राथमिक बाजार पर भी बेचा जाता है, जब वे पहली बार जारी किए जाते हैं।
- इस बाजार का सामान्यतः निश्चित स्थान होता है।
- उदाहरण - BSE, NSE

अंश - किसी कंपनी की कुल पूंजी में स्वामियों द्वारा लगाई गई पूँजी , अंश पूँजी कहलाती है। अंश पूँजी को छोटे- छोटे भागों में विभक्त किया जाता है, जिसका प्रत्येक भाग अंश कहलाता है।
प्रत्येक अंशधारी कंपनी का सदस्य कहलाता है तथा इन्हें कंपनी के लाभ में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार होता है, जिसे लाभांश कहते है।

अंश निम्नलिखित दो प्रकार के होते है –

(a) **पूर्वाधिकार/अधिमान अंश (Preference Shares)**

- ऐसे अंशधारी जिन्हें कंपनी के जीवनकाल के दौरान या चालू व्यवसाय के दौरान समता अंशधारियों से पहले लाभांश प्राप्ति का अधिकार हो तथा कम्पनी के समापन के समय

समता अंशधारियों से पहले पूँजी वापसी का अधिकार होता है, पूर्वाधिकार अंश कहलाते हैं।

- ऐसे अंशधारियों को वोटिंग का अधिकार प्राप्त नहीं होता हैं।

पूर्वाधिकार अंशो की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(1) इनमें पूँजी वापसी की राशि पूर्व निर्धारित होती है ।
(2) इस प्रकार के अंशों में पूँजी वापसी का समय पूर्व निर्धारित होता है ।
(3) इनमें लाभांश की दर भी पूर्वनिर्धारित होती है ।

भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार पूर्वाधिकार अंशों की अधिकतम आयु 20 वर्ष तक हो सकती है।

लाभ के आधार पर प्रिफरेंस शेयर चार तरह के होते हैं-

(a) नॉन क्युमुलेटिव प्रिफरेंस शेयर (असंचयी अधिमानित शेयर) -

यदि कंपनी किसी कारणवश पहले वर्ष लाभ नहीं कमाती हैं और इसकी जगह दूसरे वर्ष में लाभ कमाती हैं तो इस स्थिति में निवेशक दोनों वर्ष में लाभ प्राप्त करने का दावा नहीं कर सकता हैं।

(b) क्युमुलेटिव प्रिफरेंस शेयर (संचयी अधिमानित शेयर) -

यदि कंपनी किसी वजह से पहले वर्ष लाभ नहीं कमाती और दूसरे वर्ष में लाभ की स्थिति में आती है तो इस स्थिति में निवेशक दोनों वर्ष लाभ प्राप्त करने का दावा कर सकता हैं।

(c) रिडीम्ड क्यूमुलेटिव प्रिफरेंस शेयर(विमोचनशील अधिमानित शेयर) -

इस तरह के शेयरधारक को उसकी पूँजी निश्चित समय के बाद लाभांश (डिविडेंड) के साथ लौटा दी जाती हैं। इस प्रकार के शेयरधारक का कंपनी से जुड़ाव पूरी तरह अल्पकालिक होता है और कंपनी की इच्छा पर निर्भर करता हैं।

(d) कन्वर्टिबल प्रिफरेंस शेयर (परिवर्तनशील अधिमानित शेयर) -

इस प्रकार के शेयर निश्चित अवधि के पश्चात् इसी कंपनी के किसी अन्य वित्तीय इंट्रमेंट में बदल दिए जाते हैं।

(2) समता अंश / सामान्य अंश

प्राइमरी तथा सेकंडरी मार्केट से निवेशक जो शेयर हासिल करता है, वह ' सामान्य अंश' कहलाता हैं। इस प्रकार का शेयरधारक कंपनी का आंशिक हिस्सेदार होता है तथा कंपनी के नफे-नुकसान से जुड़ा रहता है । साधारण शेयरधारक ही इक्विटी शेयर होल्डर होते हैं।

समता अंशों की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(1) शेयरों की संख्या के अनुपात में कंपनी पर इनका मालिकाना अधिकार होता हैं।
(2) कंपनी की नीति बनाने वाली जनरल मीटिंग में इन्हें वोट देने का अधिकार होता हैं।
(3) यदि कंपनी अपना व्यवसाय पूर्ण रूप से समाप्त करती हैं, तब कंपनी अपनी सारी देनदारी चुकता करने के बाद बची हुई पूँजी संपत्ति को इन साधारण शेयरधारकों को उनकी शेयर संख्या के अनुपात से वितरित करती हैं।
(4) इनमें लाभांश की दर निर्धारित नहीं होती हैं।
(5) पूँजी वापसी की राशि निर्धारित नहीं होती हैं।

शेयर बाजार में निवेशकों के प्रकार

(1) वास्तविक निवेशक - ये निवेशक सामान्यतः अपनी बचत को लम्बी अवधि के लिए निवेश करते हैं।

(2) व्यापारी / सट्टेबाज - ये व्यक्ति बाजार के उतार-चढ़ाव का लाभ उठाने हेतु अल्पकालिक लेन-देन करते हैं।

सट्टेबाज दो प्रकार के होते हैं -

(i) तेजड़िया(Bull) :- ये सट्टेबाज हमेशा बाजार में तेजी की उम्मीद करते हैं ।

(ii) मंदड़िए (Bear) :- शेयर बाजार के वे ऑपरेटर या खिलाड़ी, जो शेयरों की तेजी से बिकवाली कर लाभ कमाने की फिराक में रहते हैं, ये ऑपरेटर शेयरों की तेज बिकवाली करके शेयरों की कीमतें गिराते हैं तथा घटी हुई कीमतों पर पुनः शेयर खरीदते हैं। शेयर बाजार की भाषा में इन्हें 'बीयर' या 'मंदड़िए' कहा जाता हैं।

शेयर बाजार में लेन-देन करने के लिए तीन खाते होना आवश्यक है ।

(1) बैंक खाता

(2) डीमैट खाता - जिस खाते में अंश डिजिटल रूप में रखे जाते हैं, वह डीमैट खाता कहलाता हैं।
यह खाता डिपोजिटरी के पास खुलवाया जाता हैं।

भारत में दो डिपोजिटरी कार्यरत है -

(a) NSDL (National Security Depository Limited)
इसकी स्थापना वर्ष 1996 में हुई।
इसका मुख्य संस्थापक NSE हैं।

(b) CDSL (Central Depository Services Limited)
इसकी स्थापना वर्ष 1998 में हुई।
इसका मुख्य संस्थापक BSE हैं।

(3) व्यापार खाता

यह खाता शेयर बाजार के मध्यस्थ ब्रोकर के पास खुलवाया जाता है, जिसे अंशों के लेन-देन हेतु बैंक खाते और डीमैट खाते के साथ उपयोग किया जाता हैं।

शेयरों के लेन-देन की प्रक्रिया
शेयरों की खरीद-बिक्री दो तरीकों से की जाती हैं-

पहला तरीका - वे कंपनियाँ, जो स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं, उनके शेयर स्टॉक एक्सचेंज में खरीदे या बेचे जाते हैं।
ब्रोकर के माध्यम से स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध शेयरों की खरीद तथा बिक्री कर सकता हैं।
दूसरा तरीका - निवेशक अन्य शेयर होल्डर से अथवा सीधे कंपनी से शेयरों को खरीद सकता हैं। जब कंपनी पहली बार

अध्याय – 17

केंद्र सरकार की योजनाएँ

एक राष्ट्र – एक राशन कार्ड योजना

- केन्द्रीय पभोक्ता मामले खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने 30 जून, 2020 तक पूरे देश में एक राष्ट्र – एक राशन कार्ड योजना लागू करने की घोषणा की है/
- खाद्य सुरक्षा की समस्या से निपटने के लिए भारत सरकार ने 'वन नेशन-वन राशन कार्ड' (One Nation One Ration Card- ONORC) योजना की शुरुआत की है। ONORC योजना किसी लाभार्थी को उसका राशन कार्ड कहीं भी पंजीकृत होने से स्वतंत्र रखते हुए देश में कहीं भी अपने कोटे का खाद्यान्न प्राप्त कर सकने की अनुमति देती है।

किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमण्डलीय समिति (Cabinet Committee on Economic Affairs-CCEA) ने किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से **किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान-कुसुम** (Kisan Urja Suraksha evam Utthaan Mahabhiyan-KUSUM) को शुरू करने की मंज़ूरी दे दी है।

लक्ष्य

- तीनों घटकों को शामिल करने वाली इस योजना का लक्ष्य वर्ष 2022 तक कुल 25,750 मेगावाट की सौर क्षमता स्थापित करना है।

योजना के लाभ

- इस योजना से ग्रामीण भू-स्वामियों को स्थायी व निरंतर आय का स्रोत प्राप्त होगा।
- किसान उत्पादित ऊर्जा का उपयोग सिंचाई ज़रूरतों के लिए कर पाएंगे तथा अतिरिक्त ऊर्जा बिजली वितरण कंपनियों को बेच पाएंगे। इससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।
- इस योजना से कार्बन डाइऑक्साइड में कमी आएगी और वायुमंडल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। योजना के तीनों घटकों को सम्मिलित करने से पूरे वर्ष में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में 27 मिलियन टन की कमी आएगी।
- घटक बी के अंतर्गत सौर कृषि पंपों से प्रतिवर्ष 1.2 बिलियन लीटर डीज़ल की बचत होगी। इससे कच्चे तेल के आयात में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी।
- इस योजना में रोज़गार के प्रत्यक्ष अवसरों को सृजित करने की क्षमता है। स्व-रोज़गार में वृद्धि के साथ इस योजना से कुशल व अकुशल श्रमिकों के लिए 6.31 लाख रोज़गार के नए अवसरों के सृजित होने की संभावना है

जल जीवन मिशन

- जल जीवन मिशन की घोषणा अगस्त 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी, इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पाइप जलापूर्ति (हर घर जल) सुनिश्चित करना है।
- जल जीवन मिशन की प्राथमिकता देश भर के सभी भागों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है।
- इस मिशन के तहत कृषि में पुनः उपयोग के लिए वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और घरेलू अपशिष्ट जल के प्रबंधन हेतु स्थानीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर भी ध्यान दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना एक केन्द्रीय क्षेत्रक योजना है

- इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 फरवरी, 2019 को लघु एवं सीमान्त किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश e की गई है/
- _इस योजना के तहत पात्र किसान परिवारों को प्रतिवर्ष 6000 के दर से प्रत्यक्ष आय सहायता उपलब्ध कराई जाती है / यह आय सहायता 2,000 रुपए की तीन सामान किस्तों में लाभान्वित किसानों की बैंक खातों में प्रत्यक्ष रूप से हस्तांतरित की जाती है/

व्यापारियों और स्वरोजगार योजना

- प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रांची में व्यापारियों और स्वरोजगार वाले व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना शुरू की है।
- यह पेंशन योजना उन व्यापारियों (दुकानदारों / खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के लिए है जिनका वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।
- इस राष्ट्रव्यापी शुरुआत से इस योजना के तहत भावी लाभार्थियों के लिए नामांकन की सुविधा देश भर में स्थित 3.50 लाख कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है।
- सरकार ने व्यापरियों (दुकानदारों/ खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना को मंजूरी दी है।
- यह 18 से 40 वर्ष की आयु के व्यापारियों के लिए एक स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है। इसमें लाभार्थी की आयु 60 वर्ष होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये मासिक पेंशन देने का प्रावधान है।
- लाभार्थी को आयकर दाता नहीं होना चाहिए तथा उसे ईपीएफओ/ ईएसआईसी/ एनपीएस (सरकार)/ पीएम-एसवाईएम का सदस्य भी नहीं होना चाहिए।
- इस योजना के तहत केंद्र सरकार का मासिक अंशदान में 50% योगदान होगा और शेष 50% अंशदान लाभार्थी द्वारा किया जाएगा।
- मासिक योगदान को कम रखा गया है। उदाहरण के लिए, एक लाभार्थी को 29 वर्ष की आयु होने पर केवल 100 रुपये प्रति माह का छोटा सा योगदान करना आवश्यक है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/c37ssj 1 web.- https://shorturl.at/mpOV7

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
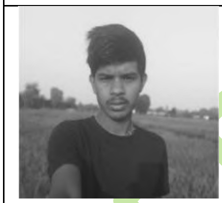	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh

FREE SAMPLE

N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner
	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR

N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur
	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
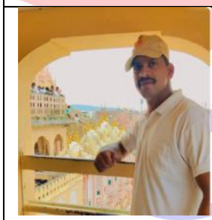	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/c37ssj

Online order करें – https://shorturl.at/mpOV7

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO